कथानायक अचळदास खीची

खीचियों की वंशोत्पत्ति का बड़ा रोचक वर्णन नैणसी ने दिया है। एक बार आसराव ने अपने पुत्र माणकराव को कहा कि सूर्योदय और सूर्यास्त तक की जितनी भूमि पर तू घूम आयेगा, उतनी भूमि तुझे बख्शी जायेगी। माणकराव ऊँट पर बैठ कर निकला और सूर्यास्त के समय जब घर आया तो बाप को सारा वृत्तान्त कहा। पिता के यह पूछने पर कि तूने कहीं खाना खाया था? माणकराव ने बतलाया कि एक स्थान पर ग्वारिया लोगों द्वारा बनाई गई खीचड़ी को ऊँट पर बैठे-बैठे ही खाया था। इस पर पिता ने उसे जितनी धरती पर वह घूम आया था, वह तो दिया ही, साथ-ही-साथ खीचड़ी खाने के कारण उसे और उसके वंशजों को खीची विरुद दिया[27] जिनसे खीचियों का उत्स हुआ है, उन चौहानों का वंशवृक्ष नैणसी ने इस प्रकार दिया है—[28]

राव लाखण	माणकराव खीची
|	|
बल	अजैराव
|	|
सोही	चंद्रराव
|	|
महंदराव	लखणराव
|	|
अणहल	गोयंदराव
|	|
जींदराव	सांगमराव
|	|
आसराव	गूंदलराव
|	
माणकराव खीची	

गूंदलराव के बाद की वंशावली नैणसी री ख्यात में नहीं है। यह हमें 'चौहान कुल कल्पद्रुम' से अग्र प्रकार प्राप्त होती है[29]—

---

27. मुहता नैणसी री ख्यात, प्रथम भाग, पृ. 250-251। सं. आचार्य पं. बदरी प्रसाद साकरिया।
28. मुहता नैणसी री ख्यात, भाग दो, सं. आचार्य पं. बदरीप्रसाद साकरिया।
29. महाराज रघुवीरसिंहजी द्वारा प्रेषित 'चौहान कुल कल्पद्रुम' की सही प्रतिलिपि के आधार पर।

Scanned by CamScanner

1. गूंदलराव उर्फ गोसिंह, जिसका राज्य जायल में था
2. बेलमंजु या आना (आनलदेव) अथवा सामन्तसिंह
3. देवनसिंह या धारू
4. जेत्रराव उर्फ जितराय
5. कल्याणराव
6. कड़वा उर्फ करोधसिंह
7. पीपाराव, प्रतापराव, अजयसिंह, मलयसिंह
   - × गोद गोविंदराव
   - कल्याणराव (गोद गया पीपाराव के)
8. कल्याणराव
9. भोजराव
10. अचळदास (हमारा कथानायक)
11. चाचिगदेव, कहानसिंह, पालनदेव, प्रताप उर्फ पातक, खड़गसिंह उर्फ गजसिंह
12. धीरजदेव
13. वेणीदास

इस प्रकार हम देखते हैं कि भोजराव का पुत्र अचळदास, हमारा कथानायक प्रसिद्ध ऐतिहासिक पात्र गूंदलराव की दसवीं पीढ़ी में उत्पन्न हुआ है। उस समय तक खीचियों ने अपना राज्य और प्रतिष्ठा काफी बढ़ा ली थी। मालवा और राजस्थान में छोटे-छोटे राज्य स्थापित कर लिए थे या फिर बड़े-बड़े राजाओं के यहाँ मोटे सामन्तों के रूप में अपने को स्थापित कर लिया था।

अचळदास धीरोदात्त क्षत्रिय वंशोत्पन्न नायक है। उस युग की परिपाटी और राजपूतों में प्रचलित बहुपत्नी प्रथा के अनुसार, अचळदास के भी अनेक विवाह हुये। उसका प्रथम विवाह उदयपुर के राणा मोकल की पुत्री, राजकुमारी पुष्पावती से हुआ था। 'अचळदास खींची री बात' में जिसका अपर नाम 'लाला मेवाड़ी री बात' भी है, पुष्पावती के स्थान पर लालां नाम दिया गया है (सम्भव है मेवाड़ के महलों में उसे प्रेम से लालां सम्बोधन से बुलाते हों)।[30] इसी बात में अचळदास की अन्य पत्नी का नाम 'उमा' बतलाया गया है, जो जांगलू के राजा खींवसी सांखला की पुत्री थी। वचनिका में इन दोनों नामों का उल्लेख नहीं है। इसमें तो अचळदास के पाँच पत्नियाँ होने का उल्लेख है, पर व्यक्तिगत रूप से नाम केवल पुहपावती (पुष्पावती) का ही प्राप्य है। अन्य पत्नियों को पीहर के गोत्र से पहिचानने के रिवाज के अनुसार केवल उनके गोत्र ही दिये गये हैं। यथा—बागड़नी, सांखली, तंवराणी और कछवाही। बात के अनुसार सांखली का नाम 'उमा' है। इन सभी वीर पत्नियों ने कठिन समय में अपने पति अचळदास का साहस बढ़ाया तथा बिना किसी हिचकिचाहट के केसरिया करने को प्रोत्साहित किया। वचनिका में पुष्पावती की कोख से उत्पन्न एक पुत्री 'ऊदी' का नामोल्लेख भी है। 'चौहान कुल कल्पद्रुम' और वचनिका में अचळदास के पुत्रों की संख्या और नामों भी अन्तर है। 'चौहान कुल कल्पद्रुम' में अचळदास के पाँच पुत्रों—चाचिगदेव, कहानसिंह, पालनदेव, प्रताप उर्फ पातल और खड़गसिंह उर्फ गजसिंह का नामोल्लेख है, तो वचनिका में केवल इनके दो नाम ही दिये गये हैं—पाल्हणसी और पातल। चांदो और धीरू संदिग्ध नाम हैं क्योंकि वंशावली में इनके नामों का उल्लेख नहीं है। एक ओर मुसलमान शासक हिन्दुओं के पारस्परिक वैमनस्य, ईर्ष्या व द्वेष का पूरा लाभ उठाते हुये चहुँ ओर अपनी विजय पताका फहरा रहे थे तो दूसरी ओर हिन्दू राजा क्षुद्र स्वार्थवृत्तियों से ग्रसित, अहंमन्यता से पीड़ित तथा आत्मगौरव से रहित जीवन-यापन कर रहे थे। व्यक्तिगत अप्रतिम शौर्य के होते हुये भी वे पराभव हो रहे थे। अचळदास पर जब हौशंगशाह (अलपखां) ने आक्रमण किया तो उसने अपनी सहायतार्थ अपने श्वसुर मेवाड़ के महाराणा मोकल और मारवाड़ के महाराजा रणमल को लिखा, पर देश के दुर्भाग्यवश जैसा कि होता आया है, वे समय पर नहीं पहुँच सके। अचळदास अपने छोटे सैन्य के साथ अपूर्व शौर्य से लड़ता है और युद्ध में काम आता है। उसकी रानियाँ गढ़ की अन्य स्त्रियों के साथ जौहर कर लेती हैं।

अचल तो अचल ही है। बादशाह की विशाल सेना देख कर भी वह शरणागति स्वीकार नहीं करता। आई हुई घोर विपत्ति में भी वह धैर्य और साहस को नहीं छोड़ता है। पत्नियों तथा परिवार के अन्य लोगों से मिलता है। उनको योग्य आदेश देता है और अन्त में स्वयं युद्ध में जूझ जाता है। वचनिकाकार ने लिखा है कि वह न अपने आत्म-तेज को छोड़ सकता है और न दीन शब्दों का उच्चारण—'तेणि पातिसाह आयां सांतरि सत छोडि

30. पं. बदरी प्रसाद साकरिया द्वारा संपादित 'लाला मेवाड़ी री बात', जो श्री दीनानाथ खत्री द्वारा सम्पादित वचनिका के साथ प्रकाशित हुई है।

Scanned by CamScanner

नहीं, खत्र खांडइ नहीं, दीन न भाखइ पागर लंघित न होई ते राजा अचलेसर सारिखा अचल नर अचलेस ही होई।' अचळदास का जीवन धन्य है, जिसने बादशाह का मुकाबला किया। 'धन धन हो राजा अचलेसर थारउ जियउ जिणि पातिसाह सउं खांडउ लियउं'। अचळदास मिट सकता है पर झुक नहीं सकता—'नवई न खीची नीव'। दृढ़ता, वीरता, साहस, धैर्य और आदर्श की वह प्रतिमूर्ति है। 'यथा नाम तथा गुण' की भाँति वह अपने नाम को सार्थक करता है।

उसे केवल एक ही चिन्ता सतत् सताती रहती है कि मेरे पीछे मेरे वंश का क्या? अपने पुत्र पाल्हणसी से वह युद्ध से विरत होने के लिये कहता है। क्षत्रियसिंह बच्चा इस आदेश को अस्वीकार करता है। दादी और माताएँ उसको मनाती हैं, पर वह नहीं मानता। इस पर अचळदास कुपित होकर उसे फटकारता है, "तू तउ कायर का-पुरिस, तूं-हइ तउ यउ ही वडउ मिस। थारउ कियउ पाछउपा कउ गळगह न चालइ।" इस पर जब पाल्हणसी पिता की आज्ञा स्वीकार कर लेता है तो अचळदास अश्रुपूरित नेत्रों से उसे अपने बाहुओं में भर लेता है। यहाँ अचळदास के मानसिक द्वन्द्व का कवि ने सुन्दर चित्रण किया है। एक ओर क्षात्रधर्म का गौरव और दूसरी ओर प्रेम-पाश। अचळदास जानता था कि युद्ध करने की इच्छा व्यक्त कर पाल्हणसी जातीय गौरव की वृद्धि ही कर रहा है, फिर भी पुत्र-प्रेम, वंशवृद्धि और वैर का बदला चुकाने की भावना से ग्रसित होकर वह पाल्हणसी को युद्ध से विरत करना चाहता है। वह कहता है, "वगडी की नाई सकल ही प्रथमि प्रतपिज्यउ भउ गढ लीज्यउ हमरउ वइर सुरताण गोरी राजा संउ कीज्यउ।" अन्त में अचल के प्रचण्ड युद्ध से अनेक यवनों का नाश होता है और स्वयं वीरगति को प्राप्त हो जाता है—'घणा असुर घण घाइ पाड़े अचलेसर पड्यउ।' पर अन्तिम साँस तक उसने अपना किला शत्रुओं के अधिकार में नहीं जाने दिया—'आपण दुरग न अप्पियउ जीवत जाइल—राइ।'

Scanned by CamScanner